

नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

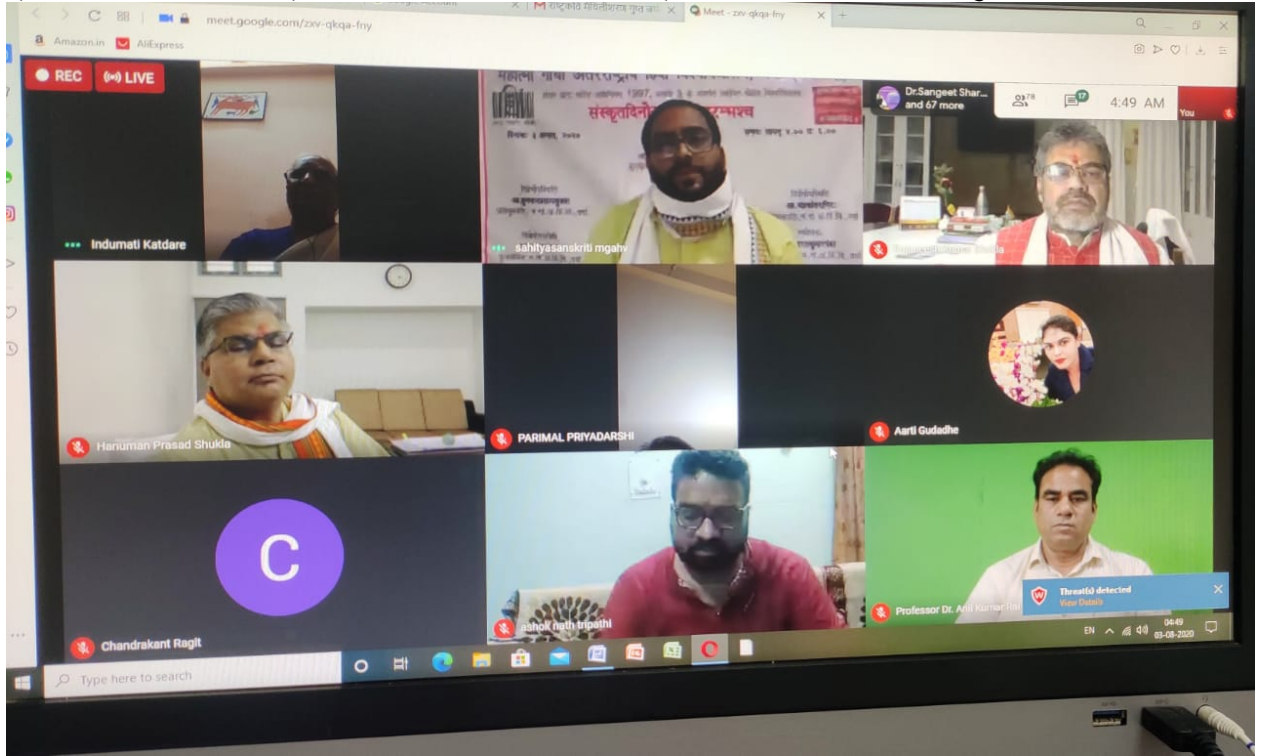
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में संस्कृत दिवस और सत्रारंभ समारोह

अधिकांश भाषाओं की जननी है संस्कृत – कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, 5 अगस्त 2020: मूल्यबोध के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण उपकरण है और मूल्यबोध संस्कृत भाषा के कोख से ही है। संस्कृत भाषा अधिकांश भाषाओं की जननी के रूप में विद्यमान है। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश



कुमार शुक्ल ने संस्कृत दिवस और सत्रारंभ समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शुक्ल ने 9 अगस्त तक चलने वाले संस्कृत सप्ताह का उद्घाटन भी किया।

साहित्य विद्यापीठ के अंतर्गत संस्कृत विभाग की ओर से संस्कृत दिवस और सत्रारंभ समारोह का आयोजन 3 अगस्त को किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पुनरुत्थान विद्यापीठ, कर्णावती की कुलपति प्रो. इंदुमती काटदरे उपस्थित थीं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल और प्रो. चंद्रकांत रागीट की विशेष उपस्थिति रही।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रस्ताव का उल्लेख करते हुए कहा कि डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर के साथ 26 सदस्यों ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा घोषित करने के लिए प्रस्ताव किया था। इन सदस्यों में संपूर्ण

भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले सदस्य शामिल थे। उन्होंने भाषा और भाषायी मूल्यों का महत्व प्रतिपादित किया। नयी शिक्षा नीति का संदर्भ लेते हुए उन्होंने कहा कि कोठारी आयोग की संस्तुति से लेकर नयी शिक्षा नीति तक देखा जाए तो शिक्षा कोई उत्पाद नहीं है। शिक्षा हमें संस्कार देती है और परिवेश के प्रति संवेदनशील बनाती है।

पुनरुत्थान विद्यापीठ, कर्णावती की कुलपति प्रो. इंदुमती काटदरे ने कहा कि संस्कृत में भारतीय ज्ञान परंपरा सुरक्षित है। उनका कहना था कि एक सच्चा भारतीय सर्व भूत, चराचर के बारे में सोचता है और यह दृष्टि हमें संस्कृत से मिलती है।

स्वागत वक्तव्य में प्रतिकुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने कहा कि संस्कृत के माध्यम से भारतीय भाषाओं ने अपने को समृद्ध किया है। संस्कृत वैज्ञानिक और हिंदी की उत्तराधिकारी भाषा है। मुख्य अतिथि प्रो. इंदुमती काटदरे का परिचय प्रो. चंद्रकांत रागीट ने कराया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भरत कुमार पंडा ने किया तथा आभार साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर ने ज्ञापित किया। कार्यक्रम में कुलसचिव कादर नवाज़ खान, डॉ. लेखराम दन्नाना, डॉ. जगदीश नारायण तिवारी और डॉ. प्रदीप की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का गुगल मीट और विश्वविद्यालय के यू ट्यूब चैनल से प्रसारित किया गया।